DSSSB TGT & PGT

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

ROJGAR With ANKIT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

कारक प्रकरण

Part -2

LIVE 07-05-2024 05:00 PM

विभक्ति प्रयोग

सुप् (21 प्रत्यय)

विभक्ति सभी शब्दों के अन्त में 'सु', 'औ', 'जस्' आदि प्रत्यय लगते हैं। इन्हीं प्रत्ययों के आधार पर उनके सात विभक्तियों के रूप में चलते हैं। ये प्रत्यय 'सुप्' प्रत्यय कहलाते हैं। इन्हीं को 'सुप् विभक्ति' भी कहते हैं। धातुओं में 'ति', 'तस', 'अन्ति' आदि प्रत्यय लगते हैं। ये तिङ् प्रत्यय कहलाते हैं। इन्हीं प्रत्ययों को 'तिङ् विभक्ति' भी कहते हैं।

कारक एवं विभक्ति पर्याय नहीं हैं इन कारकों का बोध क्रमशः प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी एवं सप्तमी विभक्तियाँ कराती हैं, इसलिए भ्रान्तिवश कुछ लोग कारक एवं विभक्ति को पर्यायवाची मान बैठते हैं, किन्तु ये दोनों पृथक् वस्तुएँ हैं। यदि कारक एवं विभक्ति एक ही वस्तु होते, तो प्रथमा विभक्ति का प्रत्येक शब्द कर्त्ता या द्वितीया विभक्ति का प्रत्येक शब्द कर्म होता, किन्तु न तो प्रथमा विभक्ति का प्रत्येक शब्द कर्त्ता है और न ही द्वितीया विभक्ति का प्रत्येक शब्द कर्म है; जैसे- बालि रामेण हतः । यहाँ पर बालि कर्म है, किन्तु यहाँ बालि प्रथमा विभक्ति का शब्द है और राम कर्त्ता है, उसमें प्रथमा विभक्ति का प्रयोग न होकर 'रामेण तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

संस्कृत में सात विभक्तियाँ होती हैं। कुछ लोग सम्बोधन की गणना भी विभक्ति में करते हुए आठ विभक्तियाँ मानते हैं, किन्तु सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति के ही शब्दों का प्रयोग किया जाता है; अतः उसे विभक्ति नहीं माना जा सकता है। कारकों एवं विभक्तियों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है

1. कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

सूत्र "स्वतन्त्रः कर्त्ता "

जो क्रिया को करने के लिए स्वतन्त्र होता है, वह कर्त्ता कहलाता है। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है;

यथा— रामः पठति ।

सुरेशः खादति

यहाँ 'पढ़ने' की क्रिया का स्वतन्त्र रूप से सम्पादक राम है। अतः यह ही कर्त्ता है और कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है ।

कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

सूत्रः "स्वतन्त्रः कर्ता" (1/4/54)

वृत्तिः यः क्रियासिद्धौ स्वतन्त्र्येण विवक्ष्यते, तत् कारकं कर्तृसंज्ञं भवति।

सूत्रार्थः जो क्रिया की सिद्धि अर्थात् जो क्रिया को करने में हो, वह वाक्य में कर्ता कारक होता है।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

सूत्रः : "प्रातिपदिकार्थ लिङ्ग परिमाण वचन मात्रे प्रथमा"

वृत्तिः प्रातिपदिकार्थमात्रे लिङ्गमात्राद्याधिक्ये परिमाणमात्रे संख्यामात्रे च प्रथमा स्यात् ।

राम सीता

माप तौल

सूत्रार्थः प्रातिपदिकार्थ मात्र में, लिङ्ग मात्र की अधिकता में, परिमाण अर्थ में तथा संख्या या वचन मात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

एक: बालकः

बहुत: बालकाः

उच्चैः, नीचैः

करणाः, शिक्षिका, पत्रम्

तटः तटी तटम्

प्रातिपदिकार्थ मात्र में

किसी शब्द का नाम लेने या उच्चारण मात्र से जिस अर्थ की उपस्थिति होती है या संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि पदों का वास्तविक अर्थ प्रातिपदिकार्थ कहा जाता है। प्रातिपदिकार्थ में नियतलिङ्ग (जिनका लिङ्ग निश्चित होता है) और अलिङ्ग (जिनका कोई लिङ्ग नहीं होता, सभी लिङ्गों में एक समान चलते हैं) वाले पद होते है। यहाँ अलिङ्ग से तात्पर्य 'अव्ययों' से है। क्योंकि अव्ययों का लिङ्ग नहीं होता है,अतः वह अलिङ्गी कहलाते हैं। **जैसेः**

कृष्णः श्रीः, ज्ञानम् (ये नियतलिङ्ग के उदाहरण है)।

पु० स्त्री० नपुंसकलिङ्ग

यदि हमें केवल 'कृष्ण' उच्चारण करें तो संस्कृत में यह शब्द निरर्थक है, किन्तु जैसे ही सुप् प्रत्यय जोड़कर पद बनाते हैं तब 'कृष्णः ' होता है तब संस्कृत में कृष्ण के अर्थ के साथ पुल्लिंगी होने का भी पता चलता है।

उच्चैः, नीच्चैः, शनैः शनैः आदि ये अलिङ्ग के उदाहरण है। जो किसी लिङ्ग का बोध नहीं कराते ।

लिङ्ग मात्र में (लिङ्गमात्राद्याधिक्य)

ऐसे पद जिनका कोई लिङ्ग सुनिश्चित नहीं होता है अर्थात् वह अनिश्चित होता है। संस्कृत कुछ शब्द एक ही लिङ्ग में प्रयोग किए जाते हैं, कुछ दो लिङ्गों तथा कुछ तीनों लिङ्गों में भी प्रयुक्त होते हैं। ऐसे लिङ्गमात्रादि की अधिकता वाले शब्दों में लिङग मात्र में प्रथमा विभक्ति होती है अर्थात् एक से अधिक लिङ्ग वाले शब्द के

लिङ्ग बतलाने के लिए उस शब्द के प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे:

- तटः - पुल्लिङ्ग
- तटी - स्त्रीलिङ्ग
- तटम् - नपुंसकलिङ्ग

(तटं त्रिषु) तट के तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होता है। केवल 'तट' कहने मात्र से उसके लिङ्ग का पता नहीं चलता है। तटः कहने पर पुल्लिङ्ग, का, तटी कहने पर स्त्रीलिङ्ग का तथा तटम् कहने पर नपुंसकलिंग के रूप का पता चलता है। अतः जिन शब्दों का लिङ्ग निश्चित नहीं है, उनका लिङ्ग बतलाने के लिए भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

परिमाण मात्र में

परिमाणवाचक अर्थात् माप या परिमाप बताने वाले शब्दों में प्रथमा विभक्ति होती हैं।

यहाँ परिमाण वाचक शब्दों से तात्पर्य लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, वचन आदि बताने वाले शब्दों से है।

जैसे:

"प्रस्थो व्रीहिः" यहाँ प्रथमा विभक्ति से प्रस्थ अर्थात् अधसेर (आधा किलो) का परिमाण विदित होता है। कितना चावल?

आध सेर चावल इस अर्थ के लिए यहाँ प्रस्थो व्रीहिः में प्रथमा विभक्ति है।

अन्य उदाहरण:

- द्रोणो व्रीहिः (बाल्टी भर चावल)
- खारी व्रीहिः (16बाल्टी बाल्टी भर चावल)
- आढकम् चणकम् (बाल्टी का एक चौथाई भाग चना)

वचन मात्र में:

संख्यावाचक शब्दों में अर्थात् किसी भी पदार्थ की संख्या या वचन बताने के लिए प्रथमा विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

जैसे:

एकः, द्वौ बहवः आदि ।

सूत्रः "सम्बोधने च" (2/3/47)

वृत्तिः सम्बोधनम् अभिमुखीकृत्य ज्ञापनम् ।

सूत्रार्थः किसी को अभिमुख या किसी की ओर मुख करके ज्ञापन करना सम्बोधन कहलाता है तथा सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है।

जैसेः

- हे राम !
- हे हरे !
- हे नदि !
- हे भानो!

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

" उक्ते कर्तरि कर्मणि च प्रथमा"

उक्त कर्ता और उक्त कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है अर्थात् उक्त कारक में प्रथमा विभक्ति होती है और उक्त कारक दो ही होते हैं:

1. कर्ता कारक तथा
2. कर्म कारक ।

जिस वाक्य में कर्ता उक्त होता है, वह कर्तृवाच्य होता है। यहाँ कर्ता में प्रथमा विभक्ति तथा कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे: रामः पाठं पठति ।

(राम पाठ को पढ़ता है = कर्तृवाच्य)

उक्त कर्ता — प्रधान — प्रथमा

अनुक्त कर्ता — अप्रधान — तृतीया

उक्त कर्म — प्रधान — प्रथमा

अनुक्त कर्म — अप्रधान — द्वितीया

प्रथमा — रामः पाठं पठति । (कर्तृवाच्य 1, 2, 1)

तृतीया — रामेण पाठः पठ्यते / कर्मवाच्य 3, 1 ।

तृतीया प्रथमा

जिस वाक्य में कर्म उक्त होता है, वह कर्मवाच्य होता है। यहाँ कर्म में प्रथमा विभक्ति तथा कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे: रामेण पाठः पठ्यते।

(राम के द्वारा पाठ पढा जाता है = कर्मवाच्य)

कर्ता

प्रातिपदिकार्थ

लिङ्ग परिमाण वचन

सम्बोधन

उक्त कर्ता और कर्म

षष्ठी कर्तुः ईप्सितमं

कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं।

⇒ कर्मणि द्वितीया :- कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

राम चित्र देखता है।

रामः चित्रं पश्यति।

प्रथमा सीता कथां पठति।

द्वितीया क्रिया

अकथित …

- दुह् – दुहना
- याच् – माँगना
- पच् – पकाना
- दण्ड् – दण्डित करना
- प्रच्छ् – पूछना
- रुध् – अवरोध
- चि – चुनना
- जि – जीतना
- ब्रू – कहना
- शास् – उपदेश करना
- मथ् – मथना
- मुष् – चुराना
- नी – ले जाना
- हृ – हरण करना
- वह् – ढोना
- कृष् – खींचना

उदा॰ सुरेशः गां पयः दोग्धि + दुह्

गां → द्वितीया, पयः → द्वितीया